Written by कुमार सौवीर
Monday, 21 May 2018 06:11

: [illegible] ...:

[illegible]

[illegible] : न जाने कितनी महिलाएं उसके इश्क में बेहाल थीं। उसके एक इशारे पर ही नहीं, बल्कि उसके नाम पर भी वे अपना घर-दुआर छोड़ने तक तैयार थीं। उनमें से अधिकांश ने तो उसे देखा तक नहीं था। उसके प्रति उनकी जो भी वाकफियत थी, वह या तो फोन के माध्यम से थी, या फिर उसके शब्दों और फोटोज पर निर्भर थी। लेकिन बेमिसाल समर्पण और प्रेम। उसकी एक आवाज पर ही वे अपनी जान देने तक पर आमादा थीं। वह भी तब, जबकि उनमें से ज्यादातर को न तो पीयूष नाम का अर्थ पता था, और न ही उसमें दर्ज आर शब्द का मतलब।

सच बात तो यही है कि मैंने अपनी पूरी जिन्दगी में ऐसा एक भी शख्स नहीं देखा है, जिस पर लोग दिल फेंक कर मारते हों। महिलाएं खास तौर पर। कुछ तो ऐसी भी हैं, जो पीयूष के लिए कुछ भी कर बैठने को तैयार रहती हैं। उनके तन-मन में केवल और केवल पीयूष ही पीयूष। ऐसा भी नहीं कि वह कोई फिल्मी हीरो रहा हो। कविताएं और सहज व्यवहार और हल्के-फुल्के अंदाज दिखाती फोटोज। बस्स्स्स। शायद अविवाहित रहे पीयूष आर दुबे का निधन पिछली 8 मई को हो गया। वजह थी दिल या फेफड़े में संक्रमण।

करीब न जाने कितनी महिलाओं की फेसबुक वाल पर केवल उनका नाम ही दर्ज था। लेकिन उन पर हर शब्द, हर हर्फ, हर फोटो और हर मर्म उनके इश्क का ही था। किसी का इश्क उसके बदन को लेकर था, किसी का उसकी आवाज को लेकर था, कोई उसके शब्दों पर दीवानी थी, तो कोई उसकी फोटोज पर जान देती थी। हैरत की बात है कि इन महिलाओं ने अपनी वाल पर अपनी नहीं लगायी, बल्कि या तो पीयूष की छवि थी वहां, या फिर वहां एक खालीपन का सा अहसास है। एक-दूसरे के क्षेत्र, भाषा, रहन-सहन और जलवायु से कोसों दूर पीयूष के ऐसे प्रशंसक-मित्र देश भर में थे। लेकिन भीड़ नहीं, बल्कि चुनिंदा। पीयूष की फालोइंग केवल 31 तक ही सिमिटी है। हालांकि फरीदाबाद में रहते थे पीयूष, लेकिन उनके लिखने का अंदाज बिहारी था।

महाराष्ट्र में रहने वाली मेरी एक महिला शुभ्रा देशपाण्डे ने 14 को मुझे फोन करके बताया कि पीयूष की मृत्यु हो गयी है, और वे चाहती हैं कि उनके बारे में कुछ शब्द श्रद्धांजलि स्वरूप लिख दें। इसके दो दिन बाद ही दिल्ली की मेरी एक महिला मित्र अर्चना दुबे ने यही अनुरोध किया। मेरे साथ समस्या यह थी कि बिना किसी शख्स को जाने-समझे मैं किसी के बारे में क्या लिख सकता हूं। मैं कभी भी पीयूष से नहीं मिला। हां, करीब तीन बरस

पहले बोकारो की रहने वाली मत्रि डॉ राजदुलारी की □कपोस्□ट पर चर्चा के दौरान पीयूष की रचनाओं का जक्रि कयिा था□ उनका कहना था कि वे व्□यक्ति नहीं, बल्कि वचिार-भाव से प्रभावति थीं□

जाहरि है कि उसके बाद मैंने पीयूष की वाल को टटोलना शुरू कयिा□ सहज प्रेम से जुड़े दुख, हर्ष, आनंद, वछिोह, आंसू, और उठापटक जैसे भाव पसरे हु□ थे□ यह भी हो सकता है कि □कपुरूष होने के नाते मैं पीयूष को अधकि समझने लायक नहीं समझ पाया□ लेकनि अचानक जब □कसाथ शुभ्रा और अर्चना ने यह आग्रह कयिा, तो मैं चौंक पड़ा□ डॉ राजदुलारी का अता-पता तक नहीं था□ न फोन, न मैसेंजर□ वाट्सऐप पर वे रहती नहीं, और फेसबुक लगता है कि उन्□होंने आजकल ऑपरेट करना बंद कर रखा है□ ऐसे में मैंने पीयूष के मत्रिों को टटोलना शुरू कर दयिा□ लेकनि हैरत की बात थी कि उनमें से अधकिांश ने मेरे मैसेंजर पर □कभी संदेश का कोई भी जवाब नहीं दयिा□ सवािय राजस्□थान की रहने वाली मत्रि डॉ भावना अस्तत्ि□व ने, जनि्□होंने केवल हल्□की-फुल्□की बातें ही बतायीं□ मगर वे बताती हैं कि पीयूष □कबेहद संजीदा और समझदार व्□यक्ति थे□

हालांकि अधकिांश के लि□ पीयूष का इश्□कसूफयिाना था□ पीयूष की मौजूदगी का अहसास उनमें जीवन की हलिोरों की तरह था□ भोपाल में पीयूष की □क महलिा मत्रि ने मुझे बताया कि उन्□होंने जब पीयूष की मृत्□यु वाली पोस्□ट लखिी, तो तीन-चार महलिाओं ने मत्रि-प्रस्□ताव आ गये□ वे बताती हैं कि इन सभी वाल में केवल पीयूष की रचना□ं ही भरी पड़ी थीं□ उन से मैसेंजर पर उन्□होंने जब इस बारे में चर्चा शुरू की थी, तो उन महलिाओं का कहना था कि वे केवल पीयूष को प्□यार ही नहीं करतीं, बल्कि पीयूष उनकी सम्□पूरण दुनयिा थे□ पीयूष की □ककवति काफी आकर्षक है:- मैंने मोहब्बत का मकबरा नहीं देखा ...

हैरत की बात है कि पीयूष के पास कोई बड़ी मत्रि-मंडली नहीं थी□ लेकनि उसमें महलिाओं की सक्रयिता बेहसिाब थी□ पीयूष की मृत्□यु के बाद जो पीड़ा का प्रदर्शन लोगों ने कयिा, उनमें महलि□ं आगे थीं□ जनि भी महलिाओं से मैंने बातचीत की, उन्□होंने शुरूआत में तो यह कुबूल कयिा कि वे मैसेंजर पर पीयूष से बात करती थीं□ लेकनि उन सबने आखरिकार यह भी स्□वीकारा कि उनकी बातचीत फोन पर अक्□सर होती रहती थी□ कई महलिाओं ने यह भी बताया कि वे अपना फोन नम्□बर कसिी को भी नहीं देती हैं, लेकनि पीयूष को खुद दयिा था अपना नम्□बर□ हालांकि यह सभी महलि□ं इस बात से इनकार करती हैं कि उन्□हें पीयूष से इश्□क था, मगर वह यह नहीं बता पायीं कि तब वे लम्□बे फोन कॉल्□स पर उससे कसि वषिय पर बातचीत करती रहती थीं□ पीयूष ने अपनी वाल पर स्□लोगन दर्ज कयिा है:- मेरा इश्क मलंग..बंजारा दलि□

फरीदाबाद का रहने वाला था पीयूष□ उसके ज्□यादा उसके बारे में कोई भी जानकारी नहीं□ सवािय इसके कि उसकी आखरिी पोस्□ट पर इश्□क के ठुकराने जैसा भाव था□

" तुमने मेरा हाल तक नहीं पुछा "

मैं कई दनि से बीमार था

और तुमने मेरा हाल तक नहीं पुछा

Written by कुमार सौवीर
Monday, 21 May 2018 06:11

बहुत ही बेबस, बहुत लाचार था

और तुमने मेरा हाल तक नहीं पुछा

असीम पी□ा, बदन में दर्द ल□ बेचैनी

मुझे तेज बुखार था

और तुमने मेरा हाल तक नहीं पुछा

क्योंकि तुम मग्न थी, थी वचिर रही बहारों में

मैं कराहता हुआ, था कैद उन दीवारों में

बस तुम्हारे , □ कफोन का इंतजार था

और तुमने मेरा हाल तक नहीं पुछा

शायद तुम्हें मेरी खबर नहीं होगी

या कहूँ , मुझ पर नजर नहीं होगी

Written by कुमार सौवीर
Monday, 21 May 2018 06:11

शायद की तुम भी , व्यस्त होगी कामों में

या तुम्हें, मेरी फिक्र नहीं होगी

मगर मैं उस पल भी बेक़रार था

और तुमने मेरा हाल तक नहीं पुछा

□ क अन्□ य लाइनें:-

खूबसूरत तो बेहसिाब हो तुम !

हाँ सच है की लाजवाब हो तुम ! !

□ क उम्र गु□ारी है , इन आँखों ने इंतजार में !

हाँ वही , वही □ क ख्वाब हो तुम ! !

कुछ अन्□ य:-

तुम्हारे बाद , जीवन क , गुजारा हो ना पायेगा □

अब तो , इश्क भी हमसे , दोबारा हो ना पायेगा □ □

Written by कुमार सौवीर
Monday, 21 May 2018 06:11

कैसे ! बाँट लूँ बस्तर , तुम्हारी ओर क्या बोलो □

तुम्हे ही चाहता है दलि , आवारा हो ना पायेगा □□

फिर यह भी:-

तू मेरी फिक्र में हर पल , तू मेरे जिक्र में हर-सू

तू मेरे हिज्र में त□पे , मैं तेरे हिज्र में तड़पू

च□ा , प्रीत-रंग , मेरे अंग-अंग

मैं प्रेम रंग में रंग गई रे

तू मुझ सा दखिने लगा सजन

मैं तुझ सी दखिने लग गई रे

□कअन्□य लाइनें:-

सूखी हुई □कशाम की टहनी से !

Written by कुमार सौवीर
Monday, 21 May 2018 06:11

बखिरे जो तेरी याद केपत्ते गरि कर !

फिरि जमीं पर दलि केकुछ बूंदें टपकी !

बेव□ह मेरी आँख से आँसू बनकर ! !

हसरतों पर चर्चा:-

थकगये है □्वाब को आराम देना चाहि□ !

हसरतों को शीघ्र ही वरिाम देना चाहि□ ! !

कब तलकगुमनामयिों केतम में भटकेगी उमर !

इस सफर , इस जदिगी को नाम देना चाहि□ ! !